सल्तनत कालीन साहित्य (1200 ई.-1526 ई.)

■ **फारसी भाषा-साहित्य :** इस काल में राजभाषा के रूप में फारसी को स्वीकृति मिली। जैसा कि हम जानते हैं कि फारसी भाषा-साहित्य का विकास ईरान में हुआ था। महमूद गजनी के समय फारसी भाषा-साहित्य का पुनर्जागरण संभव हुआ। वही काल है, जब फिरदौसी नामक विद्वान ने शाहनामा नामक कृति लिखी।

फिर तुर्की शासकों ने भारत में राजभाषा के रूप में फारसी को अपना लिया। यह वह काल है, जब दूर-दराज से विद्वान मंगोल आक्रमण के डर से भारत की ओर पलायन कर रहे थे तथा उन विद्वानों को केन्द्र तथा विभिन्न प्रांतीय सरकारों के अंतर्गत संरक्षण मिल रहा था। इसके अतिरिक्त, भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए विद्वान भी फारसी भाषा-साहित्य का संरक्षण कर रहे थे।

पहली बार इस काल में फारसी में अनेक ऐसे ग्रन्थ लिखे गए, जिनकी पहचान इतिहास ग्रन्थों के रूप में हुई है। वस्तुतः इस्लाम में पैगम्बर के जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं के अंकन को एक पवित्र धार्मिक कार्य माना गया। पैगम्बर के पश्चात् खलीफाओं के जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं का लेखन भी एक पवित्र कार्य माना गया। तत्पश्चात् आगे सुल्तान के जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं के अंकन को भी विशेष महत्व दिया जाने लगा। इसलिए इस काल में बड़ी संख्या में इतिहास ग्रन्थों की रचना हुई। दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पश्चात् सर्वप्रथम कुतुबुद्दीन ऐबक के दरबार में **हसन निजामी** नामक विद्वान ने **'ताज-उल-मासिर'** नामक ग्रंथ की रचना की। इससे हमें दिल्ली सल्तनत के स्थापत्य की सूचना मिलती है। इसके आगे की कड़ी **मिन्हाज-उस-सिराज** के द्वारा लिखित **'तबकात-ए-नासिरी'** है। उसी प्रकार, इसके आगे की कड़ी **बरनी** की **'तारीख-ए-फिरोजशाही'** है। बरनी की परंपरा को आगे बढ़ाता है **अफीफ,** जिसने एक दूसरी तारीख-ए-फिरोजशाही लिखी। इसके आगे की एक कृति **याहिया-बिन अहमद सरहिन्दी** की **'तारीख-ए-मुबारकशाही'** है।

• **अमीर खुसरो**- अमीर खुसरो अपने युग का एक प्रमुख विद्वान था। उसने फारसी में कुछ महत्वपूर्ण साहित्यिक ग्रंथों की रचना की, जिससे समकालीन इतिहास पर भी प्रकाश पड़ता है। उदाहरण के लिए, किरान-उस-सदायन, मिफ्ताह-उल-फुतुह, खजायन-उल-फुतुह आदि। सबसे बढ़कर अमीर खुसरो ने देशी भाषा के विकास में भी योगदान दिया। उसे 'हिंदवी' के विकास का श्रेय दिया जाता है। यह खड़ी बोली पर आधारित थी तथा आगे इसकी दो शैलियां विकसित हुई। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली शैली 'हिन्दी' कहलाई, तो फारसी में लिखी जाने वाली शैली 'उर्दू' (रेखता) कहलायी। इस आधार पर अमीर खुसरो को उर्दू का जनक भी माना जाता है।

■ **देशी भाषा**

• **संस्कृत साहित्य**- इस काल में कुछ हिन्दू राजवंशों का पतन हो गया था, इसलिए संस्कृत साहित्य को थोड़ा धक्का लगा था, फिर भी कुछ अन्य क्षेत्रीय हिन्दू शासकों के द्वारा इन्हें संरक्षण दिया जाता रहा। फिर चूँकि ये धर्म से जुड़े रहे थे, इसलिए इनका महत्व बना रहा।

• **हिन्दी एवं उर्दू**- इस काल में हिन्दी भाषा-साहित्य को प्रोत्साहन मिला, इसे प्रोत्साहन देने में भक्ति संतों का विशेष योगदान रहा। उदाहरण के लिए, राम भक्त कवियों ने अवधी भाषा को प्रोत्साहन दिया, तो कृष्ण भक्त कवियों ने ब्रज भाषा को। उसी प्रकार, कबीरदास ने हिन्दी भाषा को बल प्रदान किया।

फारसी भाषा एवं भारतीय भाषाओं के सम्पर्क से उर्दू का विकास हुआ। इस विषय में एक मान्यता यह है कि इसका विकास सूफी खानकाह या फिर सैनिक लश्कर (शिविर) में हुआ। यह भाषा पहले दक्षिण की ओर गयी तथा इसे 'दक्कनी' के नाम से जाना गया।

■ **क्षेत्रीय भाषा और साहित्य**

पूर्व मध्य काल में बढ़ती हुई स्थानीयता के प्रभाव के कारण क्षेत्रीय भाषा का विकास होने लगा। उदाहरण के लिए, पंजाबी, बंगाली, गुजराती, मैथिली, उड़िया आदि। पंजाबी भाषा का विकास गुरूनानक की वाणी से माना जा सकता है तथा इसे प्रोत्साहन देने में अन्य गुरूओं का भी योगदान रहा। गुरू अर्जन देव ने पंजाबी भाषा में गुरूग्रंथ साहिब का संकलन किया। उसी प्रकार, गुजराती भाषा के विकास में भक्ति संत नरसी मेहता का विशेष योगदान रहा। उन्हीं के काल में गुजराती भाषा स्वतंत्र रूप में उभरकर आयी। उसी प्रकार, मैथिली भाषा-साहित्य के विकास में हम विद्यापति का विशेष योगदान मान सकते हैं। इस काल में बांग्ला भाषा का भी स्वतंत्र रूप में विकास हुआ। बांग्ला भाषा पर भी मैथिली का प्रभाव माना जा सकता है। बताया जाता है, जब वृंदावनदास जैसे संतकवि के द्वारा चैतन्य की जीवनी लिखी गयी, तो बंगाली भाषा-साहित्य के विकास का आधार निर्मित हुआ। फिर हम इस काल में मराठा साहित्य का भी विकास पाते हैं। मराठी भाषा-साहित्य के विकास में मराठी संतों का विशेष योगदान रहा, उदाहरण के लिए, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम आदि।

मुगलकालीन साहित्य

साहित्यिक एवं कलात्मक गतिविधियों की दृष्टि से मुगल काल एक विशिष्ट काल था। मुगलों ने एक बड़े क्षेत्र में संसाधनों का दोहन किया। इसी अपार संसाधन की बदौलत साहित्य तथा कला को संरक्षण देना संभव हुआ।

■ साहित्यिक गतिविधियों को प्रेरित करने वाले कारक

मुगल शासकों ने बड़ी संख्या में विद्वानों को संरक्षण दिया। इसलिए बाबर से लेकर औरंगजेब के काल तक मुगल दरबार में विद्वानों की उपस्थिति बनी रही। आगे मुगल सम्राज्य के विघटन के पश्चात् भी मुहम्मद शाह जैसे शासकों ने विद्वानों को संरक्षण देना जारी रखा। इसलिए अकबर के काल में फैजी सरहिन्दी से लेकर अबुल फजल तक अनेक विद्वानों को संरक्षण दिया गया। उसी प्रकार, जहाँगीर के काल में मुतमिद खान, ख्वाजा कामगार, शाहजहाँ के काल में अब्दुल हमीद लाहौरी तथा इनायत खान जैसे विद्वान तथा औरंगजेब के काल में मिर्जा मुहम्मद काजिम, ईश्वरदास नागर, भीमसेन बुरहानपुरी आदि विद्वान संरक्षण पाते रहे।

मुगल शासकों को साहित्यिक लेखन में विशेष रूचि थी। उदाहरण के लिए, बाबर ने स्वयं अपनी आत्मकथा लिखी तुजुक-ए-बाबरी (तुर्की भाषा में लिखी गयी है)। आगे जहाँगीर ने 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' नामक कृति लिखी। यह जहाँगीर की आत्मकथा है।

मुगल शासकों ने भी ऐतिहासिक ग्रंथों के लेखन में विशेष दिलचस्पी दिखाई तथा उन्होंने अपने दरबार में प्रसिद्ध इतिहासकारों को संरक्षण दिया। उदाहरण के लिए, हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने हुमायूँनामा नामक कृति लिखी। अकबर के दरबार में फैजी सरहिन्दी तथा अबुल फजल दोनों ने एक-एक अकबरनामा लिखी। अबुल फजल द्वारा लिखित आईन-ए-अकबरी, अकबरनामा का ही भाग है। वहीं अकबर के एक प्रबल आलोचक बदायूंनी ने 'मुंतखाब-उत-तवारीख' नामक कृति लिखी, निजामुद्दीन अहमद ने 'तबकात-ए-अकबरी' नामक ग्रंथ लिखा। जहाँगीर के काल में मुतमिद खान ने इकबाल-नामा-ए-जहाँगीरी लिखी, तो ख्वाजा कामगार ने मासिर-ए-जहाँगीरी की रचना की। उसी प्रकार, शाहजहाँ के काल में अब्दुल हमीद लाहौरी तथा मुहम्मद वारिस ने पादशाहनामा की रचना की, जबकि इनायत खान ने शाहजहाँनामा लिखी। आगे औरंगजेब के काल में, यद्यपि इतिहास लेखन पर पाबंदी लगा दी गयी थी, इसलिए इतिहास लेखन की गतिविधियाँ सीमित ही रही थीं, फिर खफी खान को 'मुन्तखाब-उल-लुबाक' नामक कृति गुप्त रूप से लिखनी पड़ी थी। इसी काल में मिर्जा मुहम्मद काजिम ने आलमगीरनामा लिखकर औरंगजेब को अर्पित किया था।

मुगल शासकों की परंपरा उदार शासकों की परंपरा रही थी। इसलिए इनके द्वारा समन्वित संस्कृति को प्रोत्साहन दिया गया था। अतः मुगल दरबार में फारसी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषा-साहित्य को भी संरक्षण मिला था। उदाहरण के लिए, अकबर के दरबार में हिन्दी काव्य लेखन में मानसिंह तथा बीरबल (महेश दास ठाकुर) ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उसी प्रकार, शाहजहाँ के दरबार में पंडित जगन्नाथ को संरक्षण मिला था।

उत्तरवर्ती मुगल शासकों के काल में उर्दू भाषा-साहित्य को विशेष रूप में प्रोत्साहन मिला। दक्षिण की उर्दू का एक प्रमुख विद्वान वली दक्कनी 18वीं सदी में मुगल दरबार में आया। फिर उर्दू साहित्य, फारसी साहित्य के समानांतर स्थापित हो गया। उर्दू साहित्य के विकास में मीरतकी मीर, दर्द एवं सौदा जैसे कवियों का विशेष योगदान रहा।

मुगल शासकों में अकबर ने भारतीय ग्रंथों का फारसी में अनुवाद कराने में विशेष रूचि दिखाई। इसी उद्देश्य से अनुवाद विभाग की स्थापना की गयी तथा फैजी सरहिन्दी के निर्देशन में इसका संचालन हुआ। फिर रामायण, महाभारत, लीलावती, पंचतंत्र आदि प्रमुख भारतीय ग्रंथों का फारसी में अनुवाद हुआ।

इस काल में भक्ति आन्दोलन को विशेष प्रोत्साहन मिला था। इसलिए मुगल दरबार से बाहर भी क्षेत्रीय भाषा-साहित्य को प्रोत्साहन मिलता रहा। उदाहरण के लिए-

1. **अवधी भाषा**- राम भक्त कवियों का योगदान-अकबर के काल में तुलसीदास द्वारा रामचरितमानस की रचना।
2. **ब्रज भाषा**- ब्रज भाषा के विकास में कृष्ण भक्त कवियों का योगदान। अकबर के ही काल में सूरदास ने सूर सागर की रचना की। इसी काल में विठ्ठल दास ने 84 विष्णु की वार्ता की रचना की।
3. **पंजाबी भाषा**- पंजाबी भाषा के विकास में सिख गुरूओं का विशेष योगदान रहा था। किंतु 18वीं सदी तक इसमें धार्मिक साहित्य के साथ-साथ गैर-धार्मिक साहित्य की भी रचना होने लगी थी। उदाहरण के लिए, इसी काल में हीर-रांझा नामक कृति लिखी गयी।
4. **बांग्ला भाषा-साहित्य**- इसके विकास में वृन्दावन दास, कृष्णदास कविराज, लोचनदास आदि विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
5. **मराठी भाषा-साहित्य**- मराठी साहित्य के विकास में एकनाथ, तुकाराम तथा शिवाजी के गुरू रामदास समर्थ का विशेष योगदान रहा। रामदास ने 'दासबोध' की रचना की थी।

मध्यकाल में शिक्षा पद्धति का विकास

मध्यकाल में शैक्षणिक गतिविधियाँ अभिजात्य तत्वों तक ही सीमित थीं और इस संबंध में हमें जो भी सूचना प्राप्त होती है, वे सूचनाएँ भी अभिजात्य भाषाओं में ही निहित हैं।

यह वह काल है कि जब 7वीं सदी तथा उसके पश्चात् ही भारतीय उपमहाद्वीप इस्लामी विश्व की संस्कृति से प्रभावित होने लगा था। वस्तुतः इस्लामी संस्कृति का आधार कुरान ने तैयार किया था। कुरान में वे तथ्य वर्णित थे, जो अल्लाह के शब्दों में कहे गये थे तथा मुहम्मद पैगम्बर के द्वारा प्रकट किए गये थे। उसी प्रकार, कुरान की तरह हदीस का अध्ययन भी इस्लामी शिक्षा पद्धति का अंग था। हदीस मुहम्मद पैगम्बर की परम्परा को व्यक्त करता है। इस्लामी शिक्षा पद्धति ने वास्तविक विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया, फिर कागज के प्रयोग ने इस शिक्षा पद्धति के विकास में अहम भूमिका निभाई।

विशेषकर जब मध्य एशिया एवं पश्चिम एशिया में मंगोलों का आक्रमण हुआ, तो वहाँ से विद्वान पलायन करने लगे तथा वे मुस्लिम विश्व के प्रमुख केंद्र दिल्ली में आश्रय पाने लगे। मध्य एशिया तथा पश्चिम एशिया से आये हुए विद्वानों ने भी इस्लामी संस्कृति के प्रसार में अहम भूमिका निभाई। दिल्ली एवं अन्य नगरों में उनकी उपस्थिति से मक़तबों एवं मदरसों की स्थापना को प्रोत्साहन मिला। उदाहरण के लिए, एक विद्वान अल-उमरी ने 14वीं सदी में लिखते हुए यह सूचित किया है कि दिल्ली में लगभग 1 हजार मदरसे स्थापित थे।

इसके अतिरिक्त सूफी खानकाहों ने भी शिक्षा के विकास में अपनी भूमिका निभाई। निजामुद्दीन औलिया से लेकर नसीरउद्दीन तक विभिन्न सूफी संतों ने शिक्षा में अपना योगदान दिया। वस्तुतः शिक्षा के विकास में धन का आवंटन राज्य एवं निजी व्यक्ति दोनों के द्वारा किया जाता था। इसलिए शिक्षा का विकास बहुत हद तक शासक वर्ग की रूचि पर निर्भर करता था। इसलिए जब भी ऊपर के स्तर पर शासकों में परिवर्तन होता, तब विद्वानों के समक्ष भी संरक्षण मिलने का संकट उपस्थित हो जाता। कई बार साम्प्रदायिक मुद्दे; यथा- शिया-सुन्नी के मुद्दे पर भी राज्य का संरक्षण वापस लिया जाता।

सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि मध्यकाल में संस्कृत पर आधारित शिक्षा को राज्य के द्वारा संरक्षण नहीं दिया गया, अपितु राज्य ने फारसी तथा अरबी शिक्षा को संरक्षण दिया। किंतु इस तथ्य को स्वीकार नहीं किया जा सकता। हमें फारसी ग्रंथों से यह सूचना मिलती है कि इस काल में संस्कृत केन्द्रित शिक्षा पद्धति का भी विकास हुआ तथा अन्य हिंदू विद्वानों को भी प्रोत्साहन मिला। बनारस, इस काल में महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्र था। फिर ब्राह्मण केवल हिंदू-विज्ञान में ही सिद्धहस्त नहीं थे और न ही उन्होंने अपने को संस्कृत शिक्षा तक सीमित रखा था, अपितु उन्होंने अरबी एवं फारसी का ज्ञान भी प्राप्त किया था।

मध्यकाल में शिक्षा के विकास को प्रोत्साहन देने में कागज के साथ जिल्दसाजी के विकास की भी भूमिका रही। इसलिए इस काल में बड़े-बड़े पुस्तकालयों का विकास हुआ। मुगल शासकों तथा उनके कुछ महत्वपूर्ण कुलीनों ने भी महत्वपूर्ण पुस्तकालयों की स्थापना की थी। मुगल शासकों में अकबर ने शिक्षा के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। उसके द्वारा धर्मनिरपेक्ष शिक्षा पर बल प्रदान किया गया था। शाहजहाँ ने भी दिल्ली में एक कॉलेज की स्थापना की थी। मुगल दरबार में अनेक महत्वपूर्ण विद्वान थे, जैसे:-शेख अब्दुल्ला शिराजी, अबुल फज़ल, महत्वपूर्ण खगोलविद् सवाई जय सिंह तथा महत्वपूर्ण कवि मिर्ज़ा गालिब।

किंतु आगे चलकर औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत इस देशी शिक्षा पद्धति ने राज्य का समर्थन खो दिया तथा देशी शिक्षण पद्धति का एक छोटा-सा अंश ही राज्य के अंतर्गत पनप सका, जबकि उसके समानान्तर अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को विशेष प्रोत्साहन दिया गया।

■■■